हमारे इतिहासकार 10

शिक्षक :– बच्चो! आपने वर्ग 6 की कक्षा में प्राचीन भारत से संबंधित इतिहासकारों के बारे में अवश्य पढ़ा होगा। आज आप इस अध्याय के अन्तर्गत मध्यकालीन इतिहास लेखन से संबंधित कुछ प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकारों जो आपके राज्य बिहार से संबंध रखते हैं, के बारे में पढ़ेंगे। इन इतिहासकारों में सर यदुनाथ सरकार एवं सैयद हसन अस्करी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है।

भोलु :– अच्छा सर! तो आज आप इन इतिहासकारों के व्यक्तित्व एवं रचनाओं के बारे में बताएँगे।

शिक्षक :– हाँ! भोलु। तुमने ठीक समझा।

© BSTBPC WEBOOK NOT TO BE PUBLISHED

सर यदुनाथ सरकार (1870–1958)

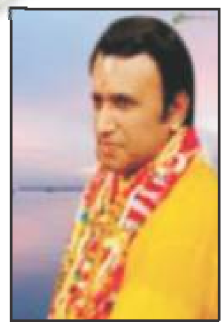
सर यदुनाथ सरकार

सर यदुनाथ सरकार एक सजग एवं सुलझे हुए इतिहासकार थे। मुगलकालीन इतिहास लेखन के क्षेत्र में उनके योगदान को उनकी मौलिकता के कारण आज भी प्रासंगिक माना जाता है। इस समय विश्व स्तर पर आधुनिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में जो प्रगति हो रही थी उससे सर यदुनाथ भली–भाँति परिचित थे। फलतः इन्होंने अपने इतिहास लेखन में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया। उन्होंने उपलब्ध सभी स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन कर इतिहास के सच तक पहुँचने का हर सम्भव प्रयास किया।

सर यदुनाथ का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने का बाद उन्होंने पटना कॉलेज के इतिहास विभाग में प्राध्यापक के पद को सुशोभित किया और अंततः 1923 ई॰ में विभागाध्यक्ष भी बने। 1926 में अवकाश ग्रहण करने के बाद भी लगातार शोध कार्यो में लगे रहे।

SOL www.absol.in

व्यक्तित्व– सर यदुनाथ समय के बड़े पाबंद थे एवं शोधार्थियों को सभी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराते थे। उन्हें राष्ट्रीय आन्दोलन एवं इससे जुड़े क्रांतिकारी नेताओं के प्रति काफी सहानुभूति थी। क्रांतिकारी गिरोह के सदस्यों का इनके घर अक्सर आना–जाना होता था जिसके कारण ब्रिटिश सरकार भी इन्हें शक की नजर से देखती थी।

प्रो॰ सरकार कई संस्थानों के सदस्य भी रहे। इन्हें ढाका तथा पटना विश्वविद्यालय से डी॰ लिट्॰ की मानद उपाधि भी मिली। इनके कलकत्ता आवास को टी॰बी॰ हॉस्पीटल के लिए दान कर दिया गया था, लेकिन किसी वजह से अस्पताल नहीं बनने के कारण वहाँ तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री नुरुल हसन की पहल पर समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र खोला गया।

इतिहासकार के रूप में– सर यदुनाथ का जीवन इतिहास के अध्ययन के लिए समर्पित रहा। इन्होंने मुगलकाल से संबंधित औरंगजेब, शिवाजी एवं मुगलकाल के पतन पर न केवल प्रमाणिक इतिहास लिखने का काम किया बल्कि अधिक से अधिक मौलिक साहित्यक एवं अभिलेखीय साक्ष्यों को ढूंढने का सफल प्रयास किया। इन्होंने किसी साक्ष्य को तब तक प्रमाणिक नहीं माना जब तक अन्य साक्ष्यों से तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद इसकी पुष्टि नहीं हो जाती। इस कार्य के लिए सर यदुनाथ ने कई भाषाओं का अध्ययन किया। ये अपने बुढ़ापे में भी सुनियोजित ढंग से कार्य करते थे ताकि अपनी रचनाओं को अधूरा छोड़कर इस संसार से विदा न हो जाएँ। सौभाग्य से इन्होंने अपनी सभी महत्वपूर्ण रचनाओं को पूरा किया।

इन्होंने इतिहास लेखन के मुख्य विषय के रूप में औरंगजेब को चुना। यद्यपि शुरू में इनका रुझान 1857 के विद्रोह पर था। कई अंगरेज इतिहासकार फारसी स्रोतों के आधार पर हिन्दू–मुस्लिम इतिहास पर काफी कुछ लिख चुके थे। इस तरह सर यदुनाथ के अध्ययन का विषय नया नहीं था लेकिन इनके अध्ययन की पद्धति तत्कालीन ब्रिटिश इतिहासकारों से अधिक विकसित थी। इन्होंने औरंगजेब का इतिहास पाँच खण्डों में लिखा और इसे लिखने में करीब 25 वर्ष का समय इन्हें लगा। औरंगजेब पर लिखने के बाद सर यदुनाथ ने इरविन के अधूरे कार्य को पूरा किया। यह पुस्तक **'लेटर मुगल्स'** (Later Mughals) नाम से छपी जिसमें 1739 तक का इतिहास वर्णित है। इनकी एक अन्य पुस्तक **फॉल ऑफ द मुगल इम्पायर** (Fall of the Mughal Empire) है। इस पुस्तक को लिखने के बाद अपनी राष्ट्रभक्ति की भावना को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने सरदेसाई को पत्र लिखा, ''मैंने इस पुस्तक को रोशनाई से नहीं अपने हृदय के खून से लिखा है। ऐसा कहकर मैं अपने उस व्यक्तिगत दुःख

और चिंता के बारे में नहीं सोच रहा हूँ जो मेरे जीवन की गोधूलि बेला में मंडरा रही है और न ही इस प्रचण्ड गर्मी में पुस्तक के लेखन में हुए घोर परिश्रम और सूक्ष्म अध्ययन के बारे में लिख रहा हूँ। राजाओं की हीन बुद्धि और चरित्रहीनता, सेनाध्यक्षों की कायरता और उनके वजीरों के स्वार्थ तथा विश्वासघात की कहानी भारत के हर सच्चे सपूत के मस्तक को शर्म से झुका देती है। फिर भी खुशी है कि मेरा काम पूरा हुआ और मैं पुनः आजाद हूँ।''

इनकी मुगलकालीन इतिहास की दो और प्रमुख रचनाएं **शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स** (Shivaji And His Times) एवं **मुगल एडमिनिस्ट्रेशन** (Mughal Administration) है। इन पुस्तकों के माध्यम से सर यदुनाथ ने तत्कालीन प्रशासन एवं शिवाजी की नेतृत्व क्षमता का विशद विवेचन किया है। इन्होंने 'दि मिलिटरी हिस्ट्री ऑफ इंडिया' नामक पुस्तक के माध्यम से भारतीय युद्ध पद्धति, सेनाओं के रख–रखाव एवं उस पर होने वाले व्यय का बड़ा सूक्ष्म अध्ययन किया है।

सर यदुनाथ ने मुगलकाल के अतिरिक्त चैतन्य**: हिज पिलग्रिमिजेज एंड टीचिंग, चैतन्याज लाइफ एण्ड टीचिंग्स, इंडिया थ्रू द एजेज** सहित **कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया** में लिखित अध्यायों के माध्यम से भारत के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इतिहास के कई पहलुओं को उजागर करने का सफल प्रयास किया है।

सर यदुनाथ की इन कृतियों का महत्व फारसी एवं अन्य भाषाओं में उपलब्ध मौलिक स्रोतों पर आधारित होने के कारण है। इन्होंने कई मूल फारसी स्रोतों का हिन्दी अनुवाद भी किया।

सर यदुनाथ की अंतिम कृति 'ए हिस्ट्री ऑफ जयपुर' (A Histry of Jaipur) है। इनसे इस पुस्तक को लिखने का अनुरोध **सवाई मानसिंह द्वितीय** ने किया। जिन्हें अपने पूर्वजों के गौरवपूर्ण इतिहास पर नाज था। सर यदुनाथ ने राजमहल के पोथी खाने में उपलब्ध स्रोतों एवं साक्ष्यों के आधार पर जयपुर का इतिहास लिखा। इसे राजमाता गायत्री देवी के प्रयास से प्रकाशित कराया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मौलिक स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन को अपने इतिहास लेखन का आधार बनाने के कारण ही सर यदुनाथ को ''**आधुनिक भारतीय वैज्ञानिक इतिहास लेखन का जनक**'' भी कहा जाता है। इन्होंने पहले–पहल आलोचनात्मक इतिहास लेखन का भी कार्य किया। इन्होंने इतिहास लेखन में समकालीन एवं प्रमाणिक स्रोतों को ही आधार बनाया। इनका सिद्धान्त था कि बिना दस्तावेज के इतिहास नहीं लिखा जा सकता है। **सर यदुनाथ सरकार** इतिहास लेखन के लिए भूगोल की भी जानकारी आवश्यक मानते थे। इनका मानना था कि इतिहास लेखन में विज्ञान की तरह वस्तुनिष्ठता नहीं आ सकती, फिर भी इतिहासकार को

वैज्ञानिक नियमों की तरह विचारों में निष्पक्षता बरतनी चाहिए। इन्होंने सदैव इस तरह की निष्पक्षता का पालन किया और दूसरों को भी निष्पक्ष लेखन का उपदेश देते रहे।

सर यदुनाथ इतिहासकारों की उस पीढ़ी से संबंधित थे जो ऐतिहासिक प्रक्रिया में व्यक्तियों की निर्णायक भूमिका और शासक वर्ग के आचरण को ही मुख्य कारक मानते थे। परिणामस्वरूप, इन्होंने अपने लेखन में आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव को अपने शोध का आधार नहीं बनाया। सर यदुनाथ के विचारों एवं उनके द्वारा किए गए विश्लेषण का पुनर्विवेचन इतिहासकारों के द्वारा किया जा रहा है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मूल स्रोतों के अध्ययन और इतिहास लेखन के माध्यम से मध्यकालीन इतिहास से बौद्धिक जगत को परिचित कराने के काम में सर यदुनाथ का महत्वपूर्ण योगदान हर समय याद किया जाएगा।

प्रोफेसर सैयद हसन अस्करी (1901-1990)

प्रो॰ सैयद हसन अस्करी अत्यन्त सरल स्वभाव के महान् विद्वान थे। इनकी सादगी, सहजता एवं सहृदयता ने इन्हें अपने जीवनकाल मे ही अनेक कथा कहानियों का पात्र बना दिया। इनके जीवन से जुड़ी घटनाएँ अध्ययन एवं शोध के प्रति इनका समर्पण ही इन्हें महान साबित करने के लिए काफी है। अस्करी साहब कभी किसी पद, प्रतिष्ठा एवं नाम के पीछे नहीं भागे। ये सदैव धुनी गवेषक की तरह मध्यकालीन इतिहास से संबंधित अभिलेखों और पाण्डुलिपियों की खोज में लगे रहे तथा नई सामग्रियों को अपनी विवेचना के साथ प्रकाश में लाते रहे।

अस्करी साहब

सैयद हसन अस्करी का जन्म सीवान जिले के एक शिक्षित मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। इन्होंने लंगट सिंह कालेज से स्नातक की परीक्षा पास करने के बाद पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर (एम॰ए॰) एवं कानून में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

इन्होंने अपने पेशे का प्रारंभ वकालत से किया लेकिन उनका मन यहाँ नहीं रमा और अंततः इन्होंने पटना कॉलेज में इतिहास के व्याख्याता के रूप में योगदान दिया। 1956 ई॰ में अवकाश प्राप्त करने के बाद भी ये 1974 ई॰ तक पटना वि॰वि॰ में अध्यापन कार्य से जुड़े रहे।

शोध कार्य में रूचि का आरंभ

पटना कॉलेज के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा॰ सुविमल चन्द्र सरकार ने एक दिन अस्करी साहब को अपने आवास पर बुलाया और कालीकिंकर दत्त (जो आगे चलकर महान इतिहासकार बने, जिनके बारे में आप अगली कक्षा में पढ़ेंगे।) नामक नौजवान से परिचय कराया। कालीकिंकर दत्त सुविमल चन्द्र सरकार के साथ पी–एच॰ डी॰ करने आए थे। डा॰ सरकार ने अस्करी साहब से कहा कि कलकत्ता से आए इस शोधार्थी को खुदाबख्श लाइब्रेरी की फारसी पाण्डुलिपि पढ़ने में मदद करें। मदद पहुँचाने के क्रम में पुरानी पाण्डुलिपियों में जो उनकी रूचि जगी, वह जीवन भर बनी रही।

असकरी साहब कई शैक्षणिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे। इन्होंने शोध सामग्री इकट्ठा करने के लिए सुदूर देहातों की भी यात्रा की। फारसी पाण्डुलिपियों के जानकार के रूप में इनकी प्रतिष्ठा दूर–दूर तक फैली हुई थी। इन्होंने लेखन कार्य प्रायः अंग्रेजी में किया लेकिन कुछ रचनाएँ उर्दू में भी हैं। अस्करी साहब ने निरंतर इतिहास विषयक कार्य करते हुए लगभग 150 मानक शोध पत्र प्रस्तुत किए।

अस्करी साहब ने कभी अर्थोपार्जन के लिए शोधकार्य नहीं किया। मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर शोध कार्य करना उनकी आदत सी बन गई थी। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के शोधार्थियों के लिए वे स्वयं स्रोत की तरह थे। पटना के मध्यकालीन बिहार से संबंधित किसी गली, कुएँ, मंदिर–मस्जिद की प्रमाणिक जानकारी वे सहज ही प्रदान करते थे।

WEBCOPY, RSTPB, NOT TO BE PUBLISHED

शोध कार्य

समकालीन स्रोतों के आधार पर लिखी गई सामग्रियों की नई, तर्कसंगत एवं क्रमबद्ध प्रस्तुति जब किसी शोधार्थी द्वारा की जाती है तो उसे विषय से संबंधित शोधकार्य कहा जाता है।

डा॰ अस्करी, काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान के निदेशक तथा खुदाबख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी की संचालन समिति के सदस्य भी रहे। अस्करी साहब कई पत्रिकाओं के संपादक मंडल के सदस्य भी रहे। प्रो॰ अस्करी को इनके कार्यों के बदले अंग्रेजी सरकार ने भी सम्मानित करते हुए 'खान साहब' की पदवी दी। इन्हें मगध एवं पटना विश्वविद्यालय ने डी॰ लिट्॰ की मानद उपाधि भी प्रदान की। इन्हें पटना के नागरिकों ने सम्मानित करते हुए 'बिहार रत्न' तथा भारत सरकार ने पद्म

श्री’ प्रदान किया। भारतीय इतिहास कांग्रेस ने भी इन्हें ‘वैज्ञानिक एवं धर्मनिरपेक्ष’ इतिहास लेखन के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया। इन्हें भारत के तीन–तीन राष्ट्रपति से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है।

[knkc['k ykbcjh

अस्करी साहब का इतिहासकार के रूप में योगदान, नए स्रोतों की खोज और उन्हें विद्वानों से परिचित कराना था। उन्होंने अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं में 200 से अधिक लेख लिखे जो विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इन्हें बाद में संकलित कर अंग्रेजी में पाँच खण्डों में और उर्दू में एक खण्ड में खुदा बख्श लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित कराया गया। एक संकलन उर्दू भाषा में बिहार उर्दू अकादमी ने भी प्रकाशित किया है। कम्प्रीहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार के अतिरिक्त उन्होंने दो अन्य पुस्तकों का भी सम्पादन किया। कम्प्रीहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार में इनके साथ सह–सम्पादक प्रो0 क्यामुद्दीन अहमद थे। इनमें इकबालनामा और शाहनामा मुनव्वर कलान शामिल हैं। दोनों मूल फारसी रचनाओं पर आधारित हैं।

असकरी साहब परम्परागत इतिहासलेखन शैली से प्ररित थे। अतः उन्होंने मुख्य रूप से राजनीतिक इतिहास और सांस्कृतिक इतिहास की ही चर्चा की है। आर्थिक इतिहास में उनकी रूचि क्रमशः। उन्होंने मध्यकालीन बिहार के सम्पूर्ण इतिहास, तुर्क शासनकाल से मुगल साम्राज्य के पतन तक अनेक लेख लिखे। बिहार के सूफी संतों, विशेषकर फ़िरदौसी संतों पर विस्तृत शोध किया। अमीर खुसरो की अनेक रचनाओं की उन्होंने आलोचनात्मक व्याख्या की। मध्यकालीन भारत के सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं पर उन्होंने जानकारी प्रदान की। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि मध्यकाल में **iku [kku** की आदत और तौर–तरीकों पर उन्होंने एक रोचक लेख लिखा था। इस तरह शासक वर्ग से लेकर सूफी संतों और आम आदमी तक के जीवन पर उन्हेंने गंभीरता से अध्ययन किया और उसकी जानकारी अपने पाठकों को दी।

अनेक स्रोतों, पाण्डुलिपियों और पुरानी रचनाओं की खोज, उसका गहन अध्ययन करके उस पर लेख लिखकर असकरी साहब ने इतिहास लेखन और इतिहास की समझदारी को समृद्ध बनाया। इससे भी महत्वपूर्ण योगदान उनका यह रहा कि उन्होंने इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता के प्रति पूरी ईमानदारी बरती। उन्होंने

स्रोतों में उपलब्ध सूचनाओं को इतिहास के छात्रों और शोधकर्त्ताओं के समक्ष रखकर उन्हें शोध और अध्ययन के लिए न केवल प्रेरित किया बल्कि उन्हें इसके लिए सामग्री भी उपलब्ध करायी।

फारसी भाषा के स्रोतों, अभिलेखों और फरमानों के अध्ययन और विश्लेषण में असकरी साहब की दक्षता अद्वितीय थी। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें अपने ज्ञान पर कोई अंहकार नहीं था। वे अत्यन्त सरल व्यक्ति थे और हर छात्र और शोध कर्त्ता की सहायता और मार्गदर्शन के लिए तत्पर रहते थे।

मानवता के प्रतीक

प्रो॰ अस्करी एक महान इतिहासकार होने के साथ–साथ मानवता के सच्चे प्रेमी भी थे। इन्होंने अपने निधन के पूर्व अपने बच्चों से उनकी मृत्यु के बाद होने वाले रीति–रिवाजों पर खर्च करने की मनाही की थी। उन्होंने अपने बच्चों को यह भी कहा कि अगर यह मंजूर न हो तो अपनी क्षमता के अनुसार चालीसवें के दिन गरीबों को खाना खिला दे और यदि हो सके तो किसी अनाथ बच्चे को पढ़ाने का खर्च संभाले या किसी विधवा की शादी पर खर्च करें। भीख मांगने वाले चाहे वे किसी भी धर्म के अनुयायी हो या विक्लांग बच्चे हो उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करें।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रो॰ अस्करी जितने बड़े इतिहासकार थे, उससे भी बड़े सरल स्वभाव के मानवता के प्रेमी भी थे।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSEB

● ● ●